जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्य में गाँधी जी

शोधार्थी– हेमलाल सहारे शोध निर्देशक–डॉ. प्रेमलता गौरे सहशोध निर्देशक–डॉ. बी.एन. जागृत
शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़) ईमेल–
hemlalsahare01@gmail.com

प्रस्तावना–

छत्तीसगढ़ के जनकवि कोदूराम 'दलित' गाँधीवादी भाव धारा के कवि रहें हैं। अतः उनके काव्यों पर अधिकतर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव है। 'दलित' जी की काव्य साधना 1926 से प्रारंभ हुई थी। उस समय देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था। कोदूराम 'दलित' गाँधी जी से प्रेरित होकर अपने लेखन के माध्यम से लोगों को जगाया करते थे। उन्होंने गाँव के युवा, मजदूर और किसानों को जागरूक कर आजादी के लिए साथ देने का आग्रह किया। जिससे वे घर से बाहर आकर देश को आजाद कराने में अपना अमूल्य सहयोग दें।

कोदूराम 'दलित' हिंदी के छन्दों में छत्तीसगढ़ी कविताओं को लिखते थे। उनका छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा पर समान अधिकार था। 'दलित' जी की रचनाएं छत्तीसगढ़ी में ज्यादा है। उनके काव्यों में राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता भावना, देशप्रेम, जन–जागरण, खादी ग्रामोद्योग, मद्य निषेध, प्रौढ़ शिक्षा, सहकारिता, प्रकृति चित्रण के साथ बच्चों की कविताएं भी शामिल है। वे हास्य–व्यंग्य के बेजोड़ कवि थे। देश की आजादी के बाद वे एक नये भारत के निर्माण के पक्षधर थे। वे गाँवों को सबके सहयोग से सुंदर बनाना चाहते थे। तथा देश के नवसृजन में समाज के सभी वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित करना चाहते थे।

कोदूराम 'दलित' के प्रमुख काव्य संग्रह हैं– 'सियानी गोठ', 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय', 'छन्नर–छन्नर पैरी बाजय', 'बाल कविताएं', 'हमर देश', 'कनवा समधी', 'दू मितान' आदि। कवि 'दलित' जी सीधे व सरल स्वभाव के गाँधी टोपी लगाने वाले शिक्षक व ठेठ देहाती कवि थे। वे परतंत्र भारत, आजाद होते भारत तथा स्वतंत्र भारत की तस्वीर देखें हैं। अतः उनके काव्य में आजादी की लड़ाईयों से लेकर देश के नवसृजन तक की गाँधीवादी विचारधारा से प्रेरित कविताएं समाहित है। वे देश को आजाद कराने की आकुलता मन में लिये हुए रहते थे। वे गाँव–गाँव जाकर लोगों को अपनी ठेठ छत्तीसगढ़ी कविता के माध्यम से जोड़ते हुए गाँधी जी के संदेशो को पहुँचाते थे। तथा लोगों को आजादी के लिए आह्वान करते थे। अपनी ही भाषा में देशप्रेम की कविता सुनकर लोग आत्मविभोर हो जाते थे। कविता संग्रह 'छन्नर–छन्नर पैरी बाजय' की कविता में सत्याग्रह के लिये प्रेरित करती हुई पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"अब हम सत्याग्रह करबो, कसो कसौटी–मा अउ देखो।
हम्मन खरा उतरबो, अब हम सत्याग्रह करबो.....
जाबो जेल, देस खातिर अब, हम्मन जीबो मरबो।
बात मानबो बापू के तभ्भे, हम सब झन तरबो।
अब हम सत्याग्रह करबो....."[1]

'दलित' जी गाँधी जी के गुणों से प्रभावित हैं। वे देश की आजादी के लिए जन–जागरण करते हैं तथा गाँधी जी सहित अन्य क्रांतिकारियों की तरह आजादी के लिए लोगों को जेल जाने का भी आग्रह करते हैं। उनका काव्य संग्रह "बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय" की एक कविता 'चलो जेल सँगवारी' की सार छन्द में एक बानगी देखिए–

"अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल सँगवारी।
कतको झिन मन चल देइन, आइस अब हमरो पारी।
कृष्ण–भवन–मां हमु मनन गाँधी जी साहीं रहिबो।
कुटबों उहाँ केकची तेल पेरबो, सब दुख सहिबो।
चाहे निष्ठुर मारय–पीटय, चाहे देवय गारी।
अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल सँगवारी।"[2]

गाँधी जी के नेतृत्व में देश में आजादी का सुनहरा सूरज चमकने लगा था। साथ ही तिलक, भगतसिंह, सुभाष, रानी लक्ष्मीबाई जैसे बलिदानियों का भी विशेष योगदान रहा है। कवि गाँधी जी के देश अनुराग से प्रभावित थे। वे उनका वंदन करते हुए अपनी रचना 'बापू की स्मृति' कविता में चौपाई छन्द में कहते हैं–

"जय–जय राष्ट्रपिता अवतारीं,
जय निज मातृभूमि मय हारीं।

जय–जय सत्य अहिन्सा–धारी,
विश्व–प्रेम के परम पुजारी।"[3]
गाँधी जी में स्वावलंबन का गुण कुट–कुटकर भरा था। वे अपने सभी काम स्वयं करते थे। चरखा चलाकर अपने लिए खादी के कपड़े बुनकर पहनते थे। आजादी के समय सभी वर्ग के लोगों को एक सूत्र में जोड़ने का श्रमसाध्य कार्य गाँधी जी ने किया और अंग्रेजों के अनेक काले कानूनों को तोड़ा भी। उनके नेक काम के कारण ही 'दलित' जी बार–बार गाँधी जी को धन्यवाद देते हैं–
"चरखा–तकली, चला–चला के खद्दर पहिने ओढ़े।
धन्य बबा गाँधी, सुराज ला लेये तभ्भे छोड़े।
सबो धरम अऊ सबो जात ला एक कड़ी मा जोड़े।
अंगरेजी कानून मनन–ला पापड़ साहीं तोड़े।"[4]
'दलित' जी समाज में समानता के प्रबल समर्थक थे। गाँधी जी के विचार थे कि लोगों में आपसी सद्भाव बना रहे, समाज के हर वर्ग के लोग आपस में प्रेम से रहे, तथा अपना व गाँव का विकास करें। उन्होंने जाति, धर्म, संप्रदाय के आपसी वैमनस्य को दूर करने पर जोर दिया। हमें देश की एकता के कारण ही आजादी मिली है। एकता में ही सबकी भलाई है। 'दलित' जी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक सुवा गीत के माध्यम से आपसी झगड़े को कष्टकारक बताते हुए समझा रहे हैं–
"तरि नारि नाना हरि नाना गोसाई!
आपस के झगरा होथय दुखदायी।।
जीयत भर तुम्मन–ला गाँधी समझाइस।
अउ जीयत भर तुम्मन–ला नेहरू मनाइस।
गणेश–शंकर "विद्यार्थी" प्राणे गँवाइस।
'एकता' मां तुम्हर स्वतंत्रता हा आइस।
मिलके रहौ तुम्हला सब झन सहराई।"[5]

सत्य व अहिंसा के पुजारी गाँधी जी के नेतृत्व में देश संघर्षरत रहा। उनके बताये मार्ग पर चलकर ही गुलामी के घोर अंधकार से मुक्ति मिली है। आजादी के 76 वर्ष बीत जाने के बाद भी गाँधी जी के संदेश आज भी प्रासंगिक है। 'दलित' जी अपने शाला के बच्चों के साथ गाँव–गाँव जाकर छत्तीसगढ़ी पारंपरिक राऊत नाचा के दोहा से गाँधी जी के विचारों को लेकर राष्ट्र–प्रेम की अलख जगाया करते थे।
"गाँधी जी देवाइस भैया, हमला सुखद सुराज।
ओकर मारग में हम सबला, चलना चाही आज।।"[6]
"गाँधी जी के छापा संगी, ददा बिसाइस आज।
भारत माता के पूजा–तैं, कर ररुहा महाराज।।"[7]
कवि 'दलित' जी ने गाँधी जी को अवतारी पुरुष कहकर उनकी महिमा का गुणगान किया है। वे कहते हैं कि गाँधी जी अपने जप और तप के बल से अमूल्य स्वराज लाकर हमें सौंप दिया है। अब उनके विचारों का अनुसरण करते हुए आजाद भारत को बैकुण्ठ बनाना है। वे सत्य, अहिंसा और शांति को प्रतिस्थापित कर नये भारत का सृजन करना चाहता है। कवि अपने काव्य संग्रह "छन्नर–छन्नर पैरी बाजय" की चौपाई छन्द में रचित कविता 'भारत ला बैकुण्ठ बनाबो' में आव्हान कर रहे हैं–
"अँवतारी गाँधी जी आइन। जप तप करिन सुराज देवाइन।
हमर देस ला हमर बनाइन। सुग्घर रसदा घलो देखाइन।
उँखरे मारग ला अपनाबो। भारत ला बैकुण्ठ बनाबो।
नव उमंग जन–जन में भरबो। दीन दुखी मन के दुख हरबो।
का जानी हम का–का करबो। अपन देस बर जीबो–मरबो।
सत्य–अहिंसा–सांति टिकाबो। भारत ला बैकुण्ठ बनाबो।"[8]

कोदूराम 'दलित' गाँधी जी के विचारों को लेकर भारत देश को बैकुण्ठ के समान बनाना चाहता है। वे रामराज्य के प्रतिस्थापना के पक्ष में हैं। इसके लिए सभी के सहयोग की अपेक्षा करते हैं। वे मद्यपान को सभ्य और स्वस्थ समाज के लिए नाश करने वाली घातक बीमारी के समान मानते हैं। कवि स्वतंत्र भारत में मद्यपान करके निठल्ला घुमने वाले लोगों को तंज कसते हुए कह रहे हैं–
"मँद पीए बर बरजिस गाँधी, महराज, जउन लाइस सुराज।
ओकर रसदा ला तज के तैं, झन रेंग आज, झन रेंग आज।"[9]

"का ये ही बुध में स्वतंत्र भारत, के राजा कहलाहू तुम?
का ये ही बुध में बापू जी के, राम राज ला लाहू तुम?"[10]
दलित जी गाँधी जी के गुणों का बखान करते हुये पहले और अब के नेताओं की तुलना करते हुए अपनी कविता 'तब के नेता–अब के नेता' में कहते हैं–
"तब के खादी–पटका वाले, अब के नेता लटका वाले।
तब के नेता गाँधीवादी, अब के नेता निरे विवादी।।"[11]

आजादी के बाद देश का नवसृजन करने के लिए सबको कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। अपने काम स्वयं करने से ही कार्य सिद्ध होता है। अतः सभी लोगों को स्वावलंबी होना होगा। कवि लोगों को कर्मशील बनाना चाहता है। वे खाली समय में लोगों को चरखा चलाने को कहते हैं। तथा खादी ग्रामोद्योग को बढ़ावा देकर ग्राम को समृद्ध करना चाहते हैं। लोगों को शहर जाने से रोकते हुए गाँव के खेती–बारी को अपनाकर, यहीं उद्योग–धंधा स्थापित कराना चाह रहे हैं। ताकि गाँव के लोग रोजगार की तलाश में पलायन करने से बचे। अतः खेती को रोजगार से जोड़ते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ लेने की बात करते हैं। गाँधी जी का भारत इनसे ही साकार होगा। ग्राम्य जनजीवन का सजीव चित्रण कवि की पंक्ति में देखिए–
"गाँधी जी के गोठ ला भुलावो झन भैया हो रे,
हाथ के कूटे–पीसे, चाँउर, दार, आटा खाव।
ठेलहा बेरा में रोज, चरखा चलाव अउ,
खादी बुनवा के पहिनव अउ ओढ़त जाव।
गाँव–गोढ़ा छोड़ के सहर जाके बसो झन,
गाँव के खेती–बारी, उद्योग–धंधा पनपाव।
एक माई के पिलवा साहीं रहो सबो झिन,
सहकारिता में तुम सुखी सब ला बनाव।"[12]
'दलित' जी स्वतंत्रता के पश्चात देश के लोगों को सचेत रहने को कह रहें हैं। हमारे असंख्य वीर–शहीदों की कुर्बानियों के बाद आजादी मिली है इसे हर परिस्थिति में संभाल कर रखना होगा। इसलिए हमें सोने की नहीं, अपितु जागने की जरूरत है। अब हमारे देश का भाग्य खुला है, और स्वतंत्रता का आलोक सर्वत्र फैल रहा है। बापू जी के सत्य व अहिंसा रूपी बाण ने विजय का मार्ग प्रशस्त्र किया है।
"झन सुत सँगवारी जाग–जाग। अब तोर देश के खुलिस भाग।
छिटकिस स्वतंत्रता के अँजोर। जगमगा उठिस अब देश तोर।
सत् अउर अहिंसा राम–बान। बापूजी मारिस तान–तान।"[13]

गाँधी जी के मंगलमय रामराज्य का निर्माण कर मानव समाज के सुख का कारण बने तब स्वराज का महत्व है। हम दीन–दुखियों, असहाय जनों के काम आये। स्वार्थ, भेदभाव तथा ऊँच–नीच जैसी विषमताओं की खाई को पाटकर नये समाज का निर्माण करें तभी गाँधी जी का स्वप्न साकार होगा। कवि की सुंदर राज्य बनाने की कल्पना इस प्रकार है।
"लाने हन जुरमिल के जइसे हम्मन सुराज।
तइसे येला अब सुग्घर राज बनाबो जी।
कतको झन अब तक ले जस के तस परे हवँय।
उन बपुरा मन के सब दुःख दरद मिटाबो जी।"

x x x x

"हम संत विनोभा गाँधी अउ नेहरु जी के।
मारग मा जुरमिल के सब्बो झन चली आज।
तज अपस्वारथ कायरी फूट अउ भेद–भाव।
पनपाई जल्दी अब समाजवादी समाज।"

x x x x

"कमिया किसान हो, तुम्हला खेत बलात हवँय।
धर नाँगर–बक्खर जावव तुम्मन खेत–खार।
उपजा के अन्न भरो ढाबा–डोली मन मा।
जेमा सब–ला मिल जाय पेट भर भात दार।"[14]

निष्कर्ष :–

कोदूराम 'दलित' छत्तीसगढ़ के गिरधर कविराय के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से स्वतंत्रता के पूर्व आजादी के लिये और पश्चात देश के नवनिर्माण के लिये जनमानस को जागरूक करने का सराहनीय कार्य किया है। वे गाँधी जी के विचारों को लेकर समाज के सभी वर्ग के लोगों के साथ नव भारत का स्वप्न देखते हैं। तथा उन्हें पूरा करने का यथोचित मार्ग भी दिखाते हैं। वे किसानों को पसीनों की बूंदो से खेतों को सिंचित कर भरपूर अन्न उगाने को कहते हैं, जिससे कोई भूखा न हो। वहीं मेहनतकश मजदूरों को कल–कारखानों, खदानों में बिना रूके कर्मरत रहने को कहते हैं। ताकि कड़ी मेहनत से देश का उत्तरोत्तर विकास हो सके। जिससे राज्य व देश समृद्ध बने।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. दलित कोदूराम, छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, संपादक– नंदकिशोर तिवारी, छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृष्ठ क्र. 48
2. दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, छत्तीसगढ़ी खंड, संपादक–लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, पृष्ठ क्र. 46
3. वही, पृष्ठ क्र. 37
4. वही, पृष्ठ क्र. 48
5. वही, पृष्ठ क्र. 55
6. वही, पृष्ठ क्र. 85
7. वही, पृष्ठ क्र. 88
8. दलित कोदूराम, छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, संपादक– नंदकिशोर तिवारी, छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृष्ठ क्र. 32
9. दलित कोदूराम, दू मितान, संपादक– अरुण कुमार निगम, एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृष्ठ क्र. 14
10. वही, पृष्ठ क्र. 15
11. दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, छत्तीसगढ़ी खंड, संपादक–लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, पृष्ठ क्र. 33
12. दलित कोदूराम, छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, संपादक– नंदकिशोर तिवारी, छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृष्ठ क्र. 49
13. दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, छत्तीसगढ़ी खंड, संपादक–लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, पृष्ठ क्र. 60
14. वही, पृष्ठ क्र. 52

हेमलाल सहारे
शोधार्थी हिंदी

शिक्षण आणि समाज SAVITRIBAI PHULE PUNE UNIVERSITY सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ ।। यः क्रियावान् स पण्डितः।। Education and Society

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्य में गाँधी जी

Authored By

शोधार्थी– हेमलाल सहारे शोध निर्देशक–डॉ. प्रेमलता गौरे सहशोध निर्देशक–डॉ. बी.एन. जागृत
शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

Published in
Education and Society **(शिक्षण आणि समाज)** : ISSN **2278-6864** with IF=6.718
Vol. 48, Issue 01, No. 06, January - March : 2024
UGC CARE Approved, Group I, Peer Reviewed,
Bilingual, Multi-disciplinary Referred Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Editor
Shikshan Ani Samaj

जनकवि कोदूराम "दलित" की छत्तीसगढ़ी कविता में राष्ट्रीय चेतना

हेमलाल सहारे शोधार्थी शास.दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव(छ.ग.)
डॉ. प्रेमलता गौरे शोध निर्देशक शास.दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव(छ.ग.)
डॉ. बी.एन. जागृत सह–शोध निर्देशक शास.दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव(छ.ग.)

प्रस्तावना–

जनकवि कोदूराम "दलित" मूलतः गाँधीवादी कवि रहे हैं। वस्तुतः उनके लेखन में अधिकांशतः गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव है। उनका लेखन कार्य 1926 से प्रारंभ हुआ, तो स्वाभाविक है उस समय देश आजादी की लड़ाईयाँ लड़ रहा था। आजादी के लड़ाई में सभी लोगों ने अपना योगदान दिया है। समकालीन कवियों का यह धर्म था कि वे देश के वातावरण के अनुकूल लिखें और लोगों को जागृत करने का कार्य करें। दलित जी गाँधी जी से प्रेरित होकर गाँव के लोगों को आजादी के लिये जगाया करते थे। वे कवि सम्मेलनों में आव्हान गीत, जागरण गीत के माध्यम ये युवाओं में जोश भरते थे। जिससे गाँव के युवा भी आजादी के लिये घर से निकले और देश को आजाद कराने में सहयोग करे। कवि अपनी कविता के माध्यम से गाँधी जी के कार्य चरखा चलाना, सूत कातना, खादी का उपयोग करना बताते हैं। वही लोगों को जेल जाने तक के लिये भी तैयार करते हैं। उन्होंने मजदूर और किसानों को भी आजादी के लिये साथ देने का आग्रह किया।

"दलित" जी का छत्तीसगढ़ी और हिन्दी भाषा पर समान अधिकार था। उनकी काव्य–यात्रादेश की आजादी से लेकर उनके अंतिम साँस तक चलती रही। उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना, देशप्रेम, त्याग, लोक जागरण, खादी ग्रामोद्योग, सहकारिता के साथ प्रकृति चित्रण की अनुगुंज है। हास्य और व्यंग्य उनकी शिष्ट और प्रभावशाली मूल स्वर है। मनुष्य की शोषण की पीड़ा, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, मद्यपान विरोध, सहकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार, किसान–मजदूर की पीड़ा को उजागर करने का प्रशंसनीय कार्य किया है।आजादी के पूर्व लोगों को जागरूक कर आंदोलन के लिये तैयार करते हैं, तो आजादी के बाद भी देश के नवनिर्माण में लोगों को उनके कर्तव्यों का बोध कराकर सजग करते हैं। कवि समाज के हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर नये भारत का निर्माण करना चाहते हैं। जवान, किसान–मजदूर, महिला–पुरूष सभी को मिलकर काम करने को प्रेरित करते हैं। वे लोगों को सहकारिता अपनाने, खादी का उपयोग, मद्यपान का विरोध, पशुपालन करने, किसान–मजदूर की पीड़ा का समाधान करने, सुंदर गाँव बनाने, बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, कुटीर उद्योग, छुआछुत का विरोध, गाँव के स्कूल, अस्पताल, कुँआ, तालाब के लिये श्रमदान की बात कहकर अपना योगदान देते हैं।

इस शोध आलेख में जनकवि कोदूराम "दलित" अपने काव्य के माध्यम से देश की आजादी के लिये युवाओं, किसान–मजदूरों के साथ आने वाली पीढ़ियों के बच्चों को भी देश हित के लिये जगाने का सार्थक प्रयास किया है। जिससे आजादी के आंदोलन को सबल मिला है। साथ ही कवि आजादी के बाद देश के नवनिर्माण की बात भी करते हैं। जिससे एक आदर्श ग्राम, समाज और देश का नवसृजन हो सके। उन काव्य रचनाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत माता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी हुई है, और उन जंजीरों को काटने के लिये अपने वीर पुत्रों को आव्हान करती है। तब दलित जी की लेखनी सवैया राग में भारत माता को दिलासा देते हुये क्राँतिकारियों के स्वर में कह उठती है–

"अब रो झन भारत माता कभू,
हम बंधन–मुक्त कराबोन तोला।
अँगरेज के संग, करे बर जंग,
करे हन राजी इहाँ के सबो ला।
जेल–मां डारय, कोड़ा–मां मारय,
छोड़य बैरी हर तोप के गोला,
जइसे मन आय; करय; सहिबो,
पर जल्दी इहाँ ले भगाबोन वोला।"[1]

देश के युवाओं में नये जोश भरते हुये गाँधी जी के नेतृत्व में देश की आजादी के लिये आव्हान करते हैं–

"देस आजाद कराबो,
गाँधी के गुन गाबो, लाल
गाँधी के गुन गाबो, अरे भइया हो
गाँधी के गुन गाबो, लाल
देस आजाद कराबो लाल....
देस आजाद कराबो, अरे भइया हो
गाँधी के गुन गाबो लाल।।

परदेशी गोरा आइन हें
भूरी चाँटी–जस छाइन हें
उन्हला मार भगाबो, लाल
उन्हला मार भगाबो, अरे भइया हो
गाँधी के गुन गाबो, लाल।।"[2]

'दलित'जी ने आजादी के लिये मजदूर और किसानों को जगाकर गोरों को मार भगाने को ललकारते हैं। गाँधीजी के अगवाई में लोगों को सच्चे सपूतों की भाँति दुश्मनों को अपनी वीरता दिखाने का आव्हान करते हैं। गाँव के हर भाई–बहन को स्वतंत्रता संग्राम में अपना सहयोग करने के लिये अपनी कविता 'जागो मजूर–जागो किसान' में वे कहते हैं–

"आजादी खातिर लड़ना हे,
जागो मजूर जागो किसान।
गोरा ला खूब कुचरना हे,
जागो मजूर जागो किसान।
×××××
भारत के सिंह–सपूत सबो,
तइयार रहो बहिनी–भाई।
दुस्टन मन ला दिखा देव,
ये दारी अपन बीरताई।"[3]

इतने पर भी अंग्रेजों के अत्याचार में कमी नहीं होती। तब जनकवि की कलम आंदोलन का प्रखर स्वर लिये हुये कहती है–

"अब हम सत्याग्रह करबो,
कसो कसौटी–मा अउ देखो।
हम्मन खरा उतरबो,
अबहम सत्याग्रह करबो....
×××××
जाबो जेल, देस–खातिर अब,
हम्मन जीबो–मरबो।
बात मानबो बापू के हम
तब्भे सब झन तरबो।
अब हम सत्याग्रह करबो....."[4]

कवि युवाओं में नये जोश भरते हुये उन्हें भीम, भगीरथ और महावीर की संज्ञा से सुशोभित करते हुये देश के नवनिर्माण के लिये आव्हान करते हैं। अपने पुरुषार्थ के बल पर खँडहर में भी रंगमहल रचने को तैयार करते हैं। युवाओं को श्रमदान करने को प्रेरित कर आलस्य को छोड़ने को कहते हैं, उन्हें अपने श्रम से श्रमबिंदु के निकलने तक काम करने की आवश्यकता हैं, जिससे भारत देश जग में महान हो जाये–

"हे नव भारत के तरुण वीर,
ये भीम, भगीरथ, महावीर।
झन भुला अपन पुरुषारथ बल,
खँडहर मा रच अब रंग महल।

xxxxx

मांगे स्वदेश श्रम दान तोर,
संपदा, ग्यान–विग्यान तोर।
जब तोर पसीना पा जाही,
ये पुरुस भूमि हरिया जाही।

xxxxx

पाही बन तोर विसुद्ध ग्यान,
भारत बनही जग मा महान।
तज दे आलस, कर श्रम कठोर,
पिछवा जाबे अब झन अगोर।"[5]

स्वतंत्रता आंदोलन के समय अंग्रेज के सिपाही निःसहाय जनता पर लाठियों से प्रहार करती है। तब कवि की लेखनी कातर भाववश गाँव के ग्रामीण की सहज, सरल भाषा में कह उठती है–

"झन मार सिपाही, हमला झन मार सिपाही।
एक्के महतारी के हम–तैं, पूत आन रे भाई।
हमलाझन मार सिपाही.....
लड़त हवन हम्मन सुराज लाने बर खूब लड़ाई।
हवन पुजारी सत्य–अहिन्सा के बापू जी साहीं।
सत्याग्रही हमन चिटको गोरा–ला नहीं डराईं।
हमलाझन मार सिपाही...."[6]

गाँधी जी के नेतृत्व में देश आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। अंग्रेज सिपाही आम जनता को बहुत परेशान करते थे। आजादी के सत्याग्रह से जब अंग्रेज नरम नहीं होते तब आमजन देश को आजाद कराने के लिये जेल जाने के लिये तैयार हो जाते है। तब दलित जी कलम जागरण का स्वर लिये उद्घोष करती है–

"अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल सँगवारी।
कतको झिन मन चल देइन अब, आइस हमरो बारी।।

बड़ सिधवा बेपारी बन के, हमर देश–मा आइस।
हमर–तुम्हर–मा फूट डार के, राज–पाट हथियाइस।।
अब सब झन मन जानिन कि ये, आय लुटेरा भारी।
अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल सँगवारी।।"[7]

जनमानस को जगाते हुये 'दलित' जी कविता लोगों को जोड़ने का काम करती है। उनकी कविताएँ आंदोलन में आने के लिये प्रेरित करती है। जो व्यक्ति कामचोर, आलसी प्रवृत्ति की है, ऐसे लोगों को जमीन का भार कहते हुये व्यंग्य की शैली में उनकी पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"साँड बरोबर किंजर–किंजर के, बैठे–बैठे खायँ।
ओ भैया मन धरती खातिर, जुच्छा बोझा आयँ।।"[8]

देश के वीर महापुरूषों, वीरांगनाओं के लगातार कई वर्षों की कठिन लड़ाई के पश्चात आखिर देश को आजादी मिली। इस कार्य में सभी लोगों ने अपना योगदान दिया है। देश के सभी वर्गो में खुशी का वातावरण था। दलित जी की कविता आजादी के बाद भी लोगों को प्रेरित करती है। आजादी मिलने पर लोगों ने अपने घरों में अनेक

दिये जलाकर खुशियाँ मनाई थी। गाँव में आजादी मिलने पर लोग नाच–गा रहे हैं, साथ ही देश के विकास की कामना भी कर रहे हैं। आजादी की खुशी को व्यक्त करती उनकी कविता 'हमर लोकतन्तर' में वे कहते हैं–

"आइस हमर लोक तन्तर के आज तिहार देवारी।
बुगुर–बुगुर तैं दिया बार दे नोनी के महतारी।।
सुत–उठ के फहराइस बड़की भउजी आज तिरंगा।
अस नांदिस डोकरी दाई हर कहिके हर–हर गंगा।।

xxxxxxxx

जगर–मगर बस्ती हर बोलय, गली–खोर रुपसावय।
ठउर–ठउर मां नाचा–गम्मत, भाषण होवत जावय।।
फूलय फलय स्वर्ग बन जावय हिन्द देश ये प्यारा।
"गणतन्तर हो अमर" सदा हम इहिच लगाई नारा।।"[9]

गुलामी के घनघोर अंधकार के बाद आजादी का सुनहरा सूरज चमकने लगा। तब चारों ओर खुशी का प्रसार हो गया। अब देश के नवनिर्माण के लिये सभी को जागरूक होने की जरूरत है। कवि देश के लोगों को अब फिर से गुलाम नहीं देखना चाहते हैं। वीर महापुरूषों के दिखाये रास्ते पर चलकर देश को उन्नत बनाने के अनेक उपाय बताते हैं। देश के सहकारी योजनाओं से जुड़कर अपने परिवार, समाज और देश के विकास के लिये आव्हान करते हैं। इसलिये अपनी 'जागरण गीत' के माध्यम से वे सचेत करते हुये कहते हैं–

"अब तोर देश के खुलिस भाग, झन सुत सँगवारी जाग–जाग।
अड़बड़ दिन में होइस बिहान, सुबरन बिखेर के उइस भान।

घनघोर घुप्प अँधियार हटिस, ले–देके पापिन रात कटिस।
सत अउर अहिन्सा सफल रहिन, हिन्सा के मुख–मां लगिस आग।
झन सुत सँगवारी जाग–जाग, अब तोर देश के खुलिस भाग।

xxxxxxxx

जुट मातृ–भूमि क सेवा मां, खा चटनी, बासी, बरी साग।
झन सुत सँगवारी जाग–जाग, अब तोर देश के खुलिस भाग।"[10]

कवि आजादी के बाद लोगों को विकास से जोड़ते हुये कृषि और पशुपालन करने का संदेश देते हैं। वही दूसरी ओर मद्यपान को त्यागकर अपने परिवार, समाज, देश के विकास में योगदान देने का आव्हान करते हैं। जिससे एक सभ्य और स्वस्थ समाज का नवनिर्माण हो सके।

"बाग–बगीचा मां हम सुग्घर फल के पेड़ लगाई।
बारी–बखरी–मां भाजी–तरकारी बोवत जाई।।

xxxxxxx

पालों गाय, भइँस अउ छेरी–दही–दूध पाये बर।
पोसीं कुकरी–बदक, गार बेचे बर अउ खाय बर।।[11]

xxxxxxx

पियई मा तोर लगे आगी, जर जाय तोर ये जिनगानी।
पीथस निपोर तँय ढकर–ढकर, ये सरहा मौंहा के पानी।।[12]

कवि गाँव के विकास के लिये सभी लोगों को मिल–जुलकर काम करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। जिससे गाँव स्वर्ग के समान हो जाये। कवि ने श्रमदान कर स्कूल, तालाब, कुँआ आदि बनाने पर जोर दिया है। ताकि समाज और देश का नवनिर्माण हो सके। आजादी के बाद श्रमदान के बहुत कार्य भी हुये हैं। कवि की लेखनी कह उठती है–

"श्रमदान करिन कोड़िन तरिया, अउ कोड़िन सुंदर कुँआ एक।
सिरजाइन इस्कुल अस्पताल, सहरावँय सब झन देख–देख।।"[13]

"दलित" जी ने खादी और ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिये लोगों को खादी के कपड़े पहनने की सलाह देते हैं। सभी लोगो को काम मिल सके, इसलिये चरखा चलाने को प्रेरित करते है। जिससे लोग आर्थिक रूप से सबल हो सके।

"सब झन चरखा चलाँय, अउ कपड़ा पहिनँय खादी के।
सब करँय ग्राम–उद्योग खूब, रसदा मा रेंगय गाँधी के।।"[14]

जनकवि "दलित" जी स्वतंत्रता के बाद जागरण के गीत लिखकर लोगों को देश के नवनिर्माण के लिये आव्हान करते हैं। देश का नवनिर्माण सभी के सहयोग से ही किया जा सकता है। छत्तीसगढ़ त्यौहारों का गढ़ है। यहाँ प्रत्येक त्यौहार बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। कवि ने अपनी कविता "दिया बारबो" में यह संदेश देने का सार्थक प्रयास किया है कि दीपावली के त्यौहार में हम उन सिपाहियों की आरती पहले उतारेगें। जिन्होंने देश के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। दीपावली के दिन यादव कुल के पुरूषों के द्वारा अपने मालिक की मंगलकामनाकरते हुये दोहे कहे जाते हैं। कवि उन लोगों को भी ये संदेश देते हुये कहते है कि अब देश के उन लोगों को हम दोहे कहते हुये तिलक करेगें जो सेना में जाने को तैयार है। यह कहकर दलित जी नवयुवकों को देश की रक्षा के लिये तैयार करते है। त्यौहार के माध्यम से लोगों को जागरण करने का कवि का यह अनूठा तरीका है। पंक्तियाँ इस प्रकार है–

"आइस सुग्घर परब सुरहुती अउ देवारी।
चल नोनी हम, ओरी–ओरी दिया बारबो।
जउन सिपाही जी–परान होमिन स्वदेश बर।
पहिली उँकरे आज आरती हम उतारबो।
××××××
राउत भइया चलो आज सब्बो झन मिलके।
देश–जागरण के दोहा हम खूब पारबो।
सेना–मां जाये खातिर जे राजी होही।
आज उही भइया ला हम्मन तिलक सारबो।"[15]

कवि को देश से अनुराग है। इसलिये तो वह भारत को बैकुंठ बनाने की बात करता है। वे कहते हैं कि गाँधीजी सहित अनेक वीर योद्धाओं के कारण हमें यह कीमती आजादी मिली है। अब हमारी ये जिम्मेदारी है कि देश का विकास करते हुये उन्नत बनाये। नये उमंग और जोश के साथ हम देश के लिये जुट जायें। गाँधीजी के विचारों को लेकर दीन–दुखियों के दुख को हरे और सत्य, अहिंसा के साथ नये भारत का निर्माण करें। कवि के नवभारत का चित्र इस प्रकार दिखाई देता है–

"नव उमंग जन–जन मा भरबो, दीन–दुखी मन के दुख हरबो।
का जानी हम का–का करबो, अपन देश बर जीबो–मरबो।
सत्य अहिंसा शांति टिकाबो, भारत ला बैकुंठ बनाबो।"[16]

निष्कर्ष–

जनकवि कोदूराम "दलित" अपने काव्य के माध्यम से देश की आजादी के लिये युवाओं, किसान–मजदूरो ंके साथ आने वाली पीढ़ियो ंके बच्चों का ेभी देश हित के लिये जगाने का सार्थक प्रयास किया है। जिससे आजादी के आंदोलन का ेसबल मिला है। साथ ही कवि आजादी के बाद देश के नवनिर्माण की बात भी करते हैं।आजादी के बाद देश के नवनिर्माण में लोगों को उनके कर्तव्यों का बोध कराकर सजग करते हैं। कवि समाज के हर वर्ग के लोगों को साथ लेकर नये भारत का निर्माण करना चाहते हैं। जवान, किसान–मजदूर, महिला–पुरूष सभी को मिलकर काम करने को प्रेरित करते हैं। वे लोगों को पशुपालन करने, मद्यपान का विरोध, सुंदर गाँव बनाने, बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, परिवार नियोजन, कुटीर उद्योग, छुआछुत का विरोध, खादी का उपयोग,गाँव के स्कूल, अस्पताल, कुँआ, तालाब के लिये श्रमदान की बात कहकर अपना योगदान देते हैं। कवि आजादी में शहीद हुये लोगों को मान देते हैं, और नवयुवकों को सैनिक बनकर देश रक्षा के लिये जागृत करते हैं। जिससे एक आदर्श ग्राम, समाज और देश का नवसृजन हो सके।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, कोदूराम "दलित", प्रकाशक छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृ.क्र. 45।
2. हमर देश, कोदूराम "दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम.प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 7।
3. हमर देश, कोदूराम "दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 9।
4. हमर देश, कोदूराम "दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 11
5. छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, कोदूराम "दलित", प्रकाशक छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृ.क्र. 47।
6. छन्नर–छन्नर पैरी बाजय, कोदूराम "दलित", प्रकाशक छत्तीसगढ़ी साहित्य परिषद बिलासपुर, 2007, पृ.क्र. 53।
7. हमर देश, कोदूराम "दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 12।
8. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, "कोदूराम दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 85।
9. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, कोदूराम "दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 50,51।
10. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, कोदूराम "दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 60,62।
11. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, कोदूराम "दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 76।
12. दू मितान, "कोदूराम दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 11।
13. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, "कोदूराम दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 53।
14. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, "कोदूराम दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 53।
15. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, "कोदूराम दलित", संपादन लक्ष्मण मस्तुरिया एवं अरुण कुमार निगम, सागर प्रिंटर्स पुरानी बस्ती रायपुर, 2000, पृ.क्र. 79।
16. हमर देश, कोदूराम "दलित", संपादक अरुणकुमार निगम, प्रकाशक एम.एम. प्रकाशन मस्तुरी बिलासपुर, 2021, पृ.क्र. 49।

शिक्षण आणि समाज **Education and Society**

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

जनकवि कोदूराम "दलित" की छत्तीसगढ़ी कविता में राष्ट्रीय चेतना

Authored By

डॉ. प्रेमलता गौरे

शोध निर्देशक शास.दिग्विजय स्वशासी स्नात. महा. राजनांदगाँव(छ.ग.)

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Published in
Education and Society (**शिक्षण आणि समाज**) : ISSN **2278-6864** with IF=6.718
Vol. 46, Issue 03, No. 27, April - June : 2023
UGC CARE Approved, Group I, Peer Reviewed,
Bilingual, Multi-disciplinary Referred Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

शिक्षण आणि समाज Education and Society

Editor
Shikshan Ani Samaj

जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्य में ग्राम्य जनजीवन का चित्रण

हेमलाल सहारे शोधार्थी शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्व. स्नातकोत्तर महा.राजनांदगाँव(छ.ग.)
डॉ. प्रेमलता गौरे शोध निर्देशक शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्व. स्नातकोत्तर महा.राजनांदगाँव(छ.ग.)
डॉ.(श्रीमती) बी.एन.जागृत सह शोध निर्देशक शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्व. स्नातकोत्तर महा. राजनांदगाँव(छ.ग.)

प्रस्तावना–

प्रारंभ से ही कवियों का आकर्षण ग्राम्य अनुराग रहा है। ग्राम्य जनजीवन में हमारी संस्कृति रची–बसी है। गाँव में लोक संस्कृति, संस्कार, लोककला का जीवंत दर्शन होता है। महात्मा गाँधी ने कहा है कि– "भारत की आत्मा गाँवों में बसती है।" गाँव के दर्शन बिना भारत का दर्शन अधुरा है। गाँव में निवास करने वाले लोग बहुत मेहनती होते हैं, वे सुबह से शाम तक काम करते रहते हैं। काम चाहे खेतों में हो या कारखानों में सभी जगह वे पूरी तन्मयता से करते हैं।

छत्तीसगढ़ के गिरधर कविराय के रूप में प्रसिद्ध जनकवि कोदूराम 'दलित' मूलतः गाँधीवादी विचारधारा व राष्ट्रीय चेतना के कवि रहे हैं। ठेठ गाँव में निवास करने के कारण वे ग्रामीण जनजीवन में रचे–बसे हैं, इसलिए उनके काव्य में ग्रामीण जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। कवि गाँव को सहकारिता से जोड़ते हुये विकास के पथ पर आगे बढ़ाना चाहते हैं। अपनी विशिष्ट शैली में 'दलित' जी स्थानीयता का बोध कराते हुये छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोक जीवन को उबारने का प्रयास करते हैं। गाँव में आज भी आपसी प्रेम, सद्भाव, भाईचारा, सहयोग की भावना बनी हुई है। कोदूराम 'दलित' के काव्य में ग्राम्य जनजीवन के विभिन्न रूपों का जीवंत चित्रण हुआ है। इस शोध पत्र में जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्य में ग्राम्य जनजीवन के चित्रण पर विचार किया जा रहा है।

गाँव में मेहनतकश किसान और मजदूर रहते हैं। जो खेतों में कड़ी मेहनत कर अन्न की पैदावार करते हैं। इनके ही कर्म के कंधों पर अधिकांश जीवों के भोजन का प्रबंध सुनिश्चित होता है। कवि ग्रामीण किसानों और मजदूरों की मेहनत को कुंडलियाँ छन्द में इस प्रकार चित्रित करते हैं–

"उठय बिहिनिया सुरूज हर, दिनभर रेंगत जाय।
लगय थकासी खूब तो, संझा कुन सुस्ताय।
संझा कुन सुस्ताय, रात भर सूतय कस के।
बड़े फजर उठ जाय, फेर रेंगय हँस–हँस के।
दिन भर करयँ काम कमिया, टूटत ले कन्हिया।
सुरुजे साहीं सुतयँ रात भर, उठयँ बिहिनिया।"1

देश में आजादी मिलने के बाद कवि लोगों को सुंदर गाँव बनाने की सीख देते हुये परिश्रम करने को प्रेरित करते हैं। उनकी कविता 'सुग्घर राज बनाबो' में खेत किसानों को हल लेकर बुला रहें हैं, और फसल पैदा कर सभी लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था करने का संदेश दे रही है।

"कमिया किसान हो, तुम्हला खेत बलात हवयँ।
धर नाँगर–बक्खर जावव तुम्मन खेत खार।
उपजा के अन्न भरो ढ़ाबा–ढ़ोली मन ला।
जेमा सब–ला मिल जाय पेट भर भात दार।"2

अपने गाँव को सुंदर बनाने के लिये सबको मिल जुलकर काम करने की जरूरत है। किसी गाँव का यदि विकास हुआ है तो इस बात का प्रमाण है कि सभी लोगों ने मिलकर काम किया है। जिससे अब वे सभी सुखी जीवन जी रहे हैं। गाँव में मिल जुलकर काम करने की सहज प्रवृत्ति होती है, जिनका कवि ने 'सुग्घर गाँव के महिमा' कविता में सुंदर चित्रण किया है।

"करके जुरमिल के काम धाम सब झन मन बनगे सुखी इहाँ।
कटगे जम्मों झन के कलेश अब कोन्हों नइये दुखी इहाँ।
सब झन के सुधरिस चाल चलन अउ सुधरिस सब झन के सुभाव।
येकर महिमा ला का बतावँ बड़ सुग्घर बनगे हमर गाँव।"3

गाँव में आज भी श्रमदान का महत्व है। चाहे वह तालाब निर्माण हो, सड़क निर्माण हो, किसी के घर में काम हो, गाँव की साफ–सफाई हो। सभी ग्रामवासी श्रमदान कर आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भाव और सहयोग को प्रदर्शित करते हुये गाँवों की महिमा को चरितार्थ करते हैं।

"श्रमदान करिन कोड़य तरिया अउ कोड़िन सुन्दर कुँवा एक।
सिरजाइन स्कूल–अस्पताल सहरावयँ सब झन देख–देख।
आमा अमली, बर पीपर के रुख रई लगाइन ठाँव–ठाँव।
येकर महिमा ला का बतावँ बड़ सुग्घर बनगे हमर गाँव।"4

ग्राम्य जनजीवन में अभिवादन का विशेष महत्व है। यहाँ के लोग जब किसी से मिलते हैं तब अभिवादन स्वरूप राम–राम, जय सियाराम, जय–राम कहते हैं। उनके बाद ही अपनी प्रयोजन की बात कहते हैं। गाँव में राम सब के हृदय में बसते हैं। उनकी जीवन–शैली, संस्कृति में राम समाहित है। दलित जी के काव्य में इस बात की पुष्टि होती है।

"राम तोला खोजेवँ मैं, तीरथ में–धाम में।
इहाँ–उहाँ भटकेवँ मैं, वरसा में–घाम में।
मजदूर–किसान बीच हुरहा मैं पहुचेवँ तब।
मिले मोला राम, तैं–"आराम अउ हराम में"।"5

ग्रामीण जनजीवन में गाँव की अमरईया की बातें बिना ग्राम्य दर्शन अधुरा है। यह ग्राम्य का प्रमुख आकर्षण होता है। बच्चे यहाँ खेलते–कूदते, झूला झूलते, विभिन्न खेल खेलते देखाई देते हैं। वहीं गाँव की बाड़ी में पैदा होने वाले विभिन्न फल, साग–सब्जियाँ से गाँवों की आवश्यकता तो पूरी होती है, साथ ही शहरों के जीवन को पोषित भी करती है। अमरईया पर अनेक कवियों ने अपनी कलम चलाकर गाँव की प्रकृति का सहज ही चित्रण किया है। 'दलित' जी की 'बसन्त बहार' कविता की पंक्तियाँ गाँव का चित्रण इस प्रकार कर रही है–

"तुम ही बताव? अउ हवयं कोन? बन, बाग, बगीचा लहलहायँ।
झूमय अमराई–फुलवारी भाँटा, भाजी, मुरई, मिरचा–मां।
भरे हवय मरार–बारी बड़ सुग्घर फूले लगिन फूल।"6

ग्राम्य जनजीवन में त्यौहारों का विशेष महत्व है। त्यौहार मानव मन को आल्हादित करती है। मन में नई ऊर्जा और उमंग का संचार करती है। ग्राम का प्रत्येक त्यौहार प्रकृति के साथ तादात्मय स्थापित करती है। इसी तरह त्यौहार प्रकृति तथा ऋतुओं पर भी अपना प्रभाव दिखाती है। 'दलित' जी की 'होले तिहार' कविता की एक बानगी है–

"आमा मऊँरिन परसा मन पहिरिन केसरिया हार।
जाड़ घाम दुन्नों चल देइन अपन–अपन ससुराल।
का बस्ती, का वन–उपवन, कण–कण मां खुशियाली छागे।
होले तिहार बड़ निक लागे, सबके मन मां उमंग जागे।"7

बरखा ऋतु के आने के साथ ही ग्रामीणों के कार्यों में अनेक परिवर्तन दिखाई देते हैं। कोई मस्त होकर आल्हा गाता है तो कोई खेतों में हल चलाने लगता है। किसान अपने खेतों में फसलें बोने की शुरूआत करते हैं। वही ग्रामीण महिलाएं खेतों में जाकर काम में जुट जाती है। और मधुर राग–रागिनियों में करमा, ददरिया के तान छेड़ती है। बुजुर्ग महिलाएं कहानी, गीत, किस्से सुनाकर सबका मनोरंजन करती है। गाँव में बरसात के मौसम के साथ अनेक त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। कवि ने 'चउमास' कविता में ग्रामीण संस्कृति के साथ कृषि संस्कृति का निर्वहन बखूबी किया है।

"ढोलक बजायँ, मस्त होके आल्हा गायँ रोज,
इहाँ–उहाँ कतको गँवइया–शहरिया।
नाँगर चलायँ, खेत जा–जाके किसान मन,
बोये धान–कोदों गायँ करमा–ददरिया।

× × × × ×

धान–कोदों, राहेर, जुवारी–जोंधरी, कपसा,
तिली, सन–वन बोये जाथें इही ऋतु मां।
हरेली, नागपंचमी, राखी, आठे, तीजा–पोरा,
गनेस–तिहार, सब आथें इही ऋतु मां।

× × × × ×

घर–घर रखिया, तूमा, डोड़का, कुम्हड़ा के,
जम्मो नार बेंवार–ला छानी माँ चढ़ायँ जी।
धरमी–चोला–मन पीपर बर गसती 'औ'
आमा, अमली, लीम के बिरवा लगायँ जी।"8

जनकवि कोदूराम 'दलित' ने अपने काव्य में किसान, मजदूर के कार्यों का सजीव चित्रण किया है। दलित जी किसान पुत्र थे, इसलिये वे किसानी कार्यों को भली–भाँति जानते थे। खेती–किसानी के कार्यों को वे स्वयं किये हैं। अतः इनका चित्रण भी करीब से हुआ है।

गाँव में किसान की फसल पककर तैयार होते हैं, तब आसपास के सभी लोग मिलजुलकर फसलों की कटाई, मिंजाई से लेकर घर तक पहुंचाने में आवश्यक सहयोग करते हैं। फिर दूसरे के खेतों में भी इसी तरह सहयोग किया जाता है। इससे ग्राम्य परिवेश में आपसी प्रेम, सहयोग की भावना मजबूत है।

"मातिस धान लुवाई, अब्बड़ मातिस धान लुवाई।
चल संगवारी, चल संगवारिन धान लुये ला जाई।

× × × × ×

गंगाराम लोहार सबो हंसिया मन ला फरगावय।
टें टुँवाय के नगत दूज के चन्दा कस चमकावय।"9

खेत जाते हुये नवयौवना युवतियों का हास–परिहास बरबस दिख ही जाता है। खेती–किसानी की बातें बहुत से कवियों ने अपनी कविता में की है। लेकिन दलित जी ने जैसे सौन्दर्य को देखा है वैसे किसी कवि की कविता में नहीं मिलता। 'धान लुवाई' कविता में युवतियों के सौंन्दर्य व भाव की झलक देखते ही बनती है।

"छन्नर–छन्नर पैरी बाजय खन्नर खन्नर चूरी।
हांसत कुलकत मटकत रेंगय बेलबेलहिन टूरी।"10

खेतों में काम करते हुये हास–परिहास, हंसी–मजाक होने से काम की थकावट भी महसूस नहीं होते हैं। रिश्ते में हास–परिहास प्रमुख रूप से दीदी–जीजा, देवर–भाभी, संमधी–समधन के बीच

स्वस्थ मनोरंजन के साथ देखा जाता है। यह छत्तीसगढ़ की संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। जिससे लोग प्रेमरूपी धागे से बंधकर एक–दूसरे का सहयोग करते रहते हैं। किसानी कार्य का असंभव लगने वाला कार्य इससे सहज और सरल हो जाता है। और वह दुगुने उत्साह से कार्य में लग जाता है। कविता में किसान के जीवन की सुंदरता की बानगी देखने को मिलती है।

"दीदी लुवय धान खबाखब भांटो बांधय भारा।
अउंहा–झउंहा बोहि बोहि के लेजय भौजी ब्यारा

× × × × ×

लकर–धकर बपुरी लइकोरी समधिन हर घर जावय।
चुकुर–चुकुर नान्हें बाबू ल दु–दु पिया के आवय।

× × × × ×

भउजी के भाई हर नाचय पहिने चिरहा फरिया।
फेर बटोरय करगा–वरगा वो चरिहा के चरिहा।"11

धरती के पुत्र किसान जब अपने कार्यों में पूर्ण मनोयोग से लग जाते हैं, तब वह मानों घोषणा करता है कि उनके होते हुये इस देश में कोई भूखा नहीं रह सकता। किसान अपने साथ सभी जीवों के लिये भोजन की व्यवस्था करता है। किसान की फसल पकने के बाद से घर में पहुँचने तक प्रत्येक जीव अपने–अपने हिस्से का अनाज ले लेते हैं। अंत में किसान जो बचता है, उसे अपने घर में ले जाता है। इसीलिए किसान को अन्नदाता कहा जाता है।

"अन्नपूरना देवी के बियांरा म, गंजावत हे खरही।
किसान हे जब देस म हमर, कोन इहाँ भूख मरही।"12

गाँव की कृषि संस्कृति में आनंद ही आनंद है तो दूसरी ओर यहाँ की राहों मे कांटे भी पाये जाते है। यहाँ एक के पैर में कांटा चुभ जाये तो दूसरा उस कांटे को निकाल फेंकता है। इस कारण गाँवों में मजा आता है। एक दृश्य इस प्रकार है–

"नोंकदार कांटे ये, चुभते हैं पाँवों में।
बड़ा मजा गाँवों में, आओ रे आओ रे।"13

किसान अपने खेतों में कड़ी मेहनत कर अन्न उगाता है और अपने द्वार पर आये हुये याचक को अन्न–दान करने में जरा भी संकोच नहीं करता। ग्राम्य जनजीवन में दान खुले हाथों से करते हैं। किसानों की सभी फसलें इकट्ठा हो जाने पर उत्सव के रूप में ग्राम में मंड़ई का आयोजन करते हैं। जिसमें लोग अपने–अपने परिजनो, मेहमानों को आमंत्रित करते हैं। मंड़ई में आये दैनिक जीवन की अनेक आवश्यक सामानों की खरीदी की जाती है। इसी तरह छत्तीसगढ़ में पूस माह की पूर्णिमा को अन्नदान का पर्व छेरछेरा बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। 'दलित' जी की कविता 'हम किसान' में अन्नदान का महत्व बताया गया है–

"करते हम श्रम महान,
देते हैं अन्नदान,
हम किसान, हम किसान,
खेतों में जाते हैं,
और हल चलाते हैं।"14

निष्कर्षः–

जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्यों में ग्रामीण कृषि संस्कृति का सजीव चित्रण है। उनके व्यक्तित्व की तरह ही उनकी कविता ठेठ ग्रामीणपन को लिये हुये हैं। 'दलित' जी जन्म किसान परिवार में होने के कारण बचपन से ही ग्रामीण जनजीवन को करीब से देखे हैं। इसलिये उनके काव्य में ग्राम्य

जनजीवन, कृषक, मजदूर का अधिक महत्व है। ग्राम्य जनजीवन में कर्म का संदेश देते हुये त्यौहारों में संस्कृति का समावेश दिखाई देता है। त्यौहार हमारी जीवन का अभिन्न अंग है। 'दलित' जी ने ग्राम्य जनजीवन को जिया है, जिससे उनके काव्य में इनका विस्तृत रूप दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. दलित कोदूराम, सियानी गोठ, पृष्ठ क्र. 26
2. दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, छत्तीसगढ़ी खंड, पृष्ठ क्र. 52
3. वही पृष्ठ क्र. 53
4. वही पृष्ठ क्र. 53
5. वही पृष्ठ क्र. 59
6. वही पृष्ठ क्र. 64
7. वही पृष्ठ क्र. 69
8. वही पृष्ठ क्र. 72, 73, 75
9. वही पृष्ठ क्र. 80
10 वही पृष्ठ क्र. 80
11.वही पृष्ठ क्र. 80
12.वही पृष्ठ क्र. 80
13.दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, बाल कविता खंड, पृष्ठ क्र.105
14.दलित कोदूराम, बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय, बाल कविता खंड, पृष्ठ क्र.105

शिक्षण आणि समाज

Education and Society

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

जनकवि कोदूराम 'दलित' के काव्य में ग्राम्य जनजीवन का चित्रण

Authored By

डॉ. प्रेमलता गौरे

शोध निर्देशक शोध केन्द्र– शास. दिग्विजय स्व. स्नातकोत्तर महा.राजनांदगाँव(छ.ग.)

Published in

Education and Society **(शिक्षण आणि समाज)** : ISSN **2278-6864** with IF=6.718

Vol. 46, Issue 04, No. 10, July - September : 2023

UGC CARE Approved, Group I, Peer Reviewed,

Bilingual, Multi-disciplinary Referred Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Editor
Shikshan Ani Samaj

मासिक RNI No. MPHIN/2004/14249

वर्ष - 20
अंक - जनवरी से जून - 2024
Vol - XX Issue
Issue No.
January To June - 2024)

अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /- रूपये डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0
IMPACT FACTOR
(अर्द्ध वार्षिक विशेषांक)

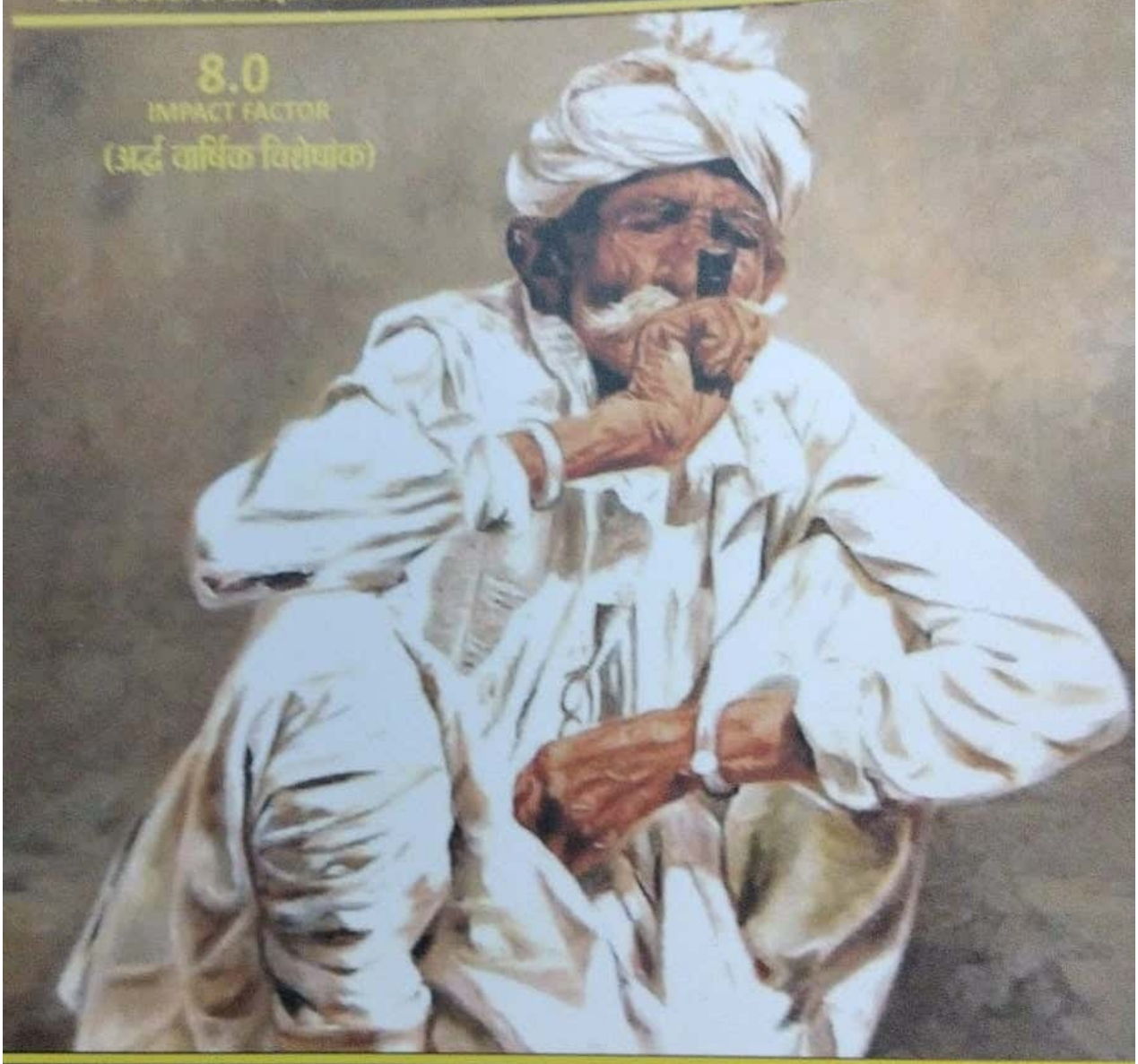

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0
» aksharwartajournal@gmail.com » https://www.aksharwartajournal.page/ » +91 8989547427
AKSHARWARTA iS Registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

अनुक्रम

» आधुनिक भारत के सांस्कृतिक एकीकरण में फिल्म-संगीत की भूमिका
डॉ. सीमा जौहरी 07

» साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की चिंता और चेतना की अभिव्यक्ति
डॉ. अजेय कुमार 10

» चितरंजन कर द्वारा रचित कैशौर्य-गीत संग्रह 'जरा मुस्कुरा कर तो देखो' की कविताओं में दिशा बोध, दायित्व बोध एवं नैतिकता बोध
डॉ. आस्था तिवारी, सुषमा प्रधान 14

» भारत में उच्च पुरापाषाणिक संस्कृति का उद्भव एवं विकास
डॉ. विनोद यादव 18

» भारत के सामाजिक उत्थान में विधि व्यवसाय की भूमिका : एक अवलोकन
डॉ. सुखवीर सिंह 22

» डॉ. भीमराव अंबेडकर का सामाजिक न्याय की दिशा में योगदान
डॉ. लोकेश कुमार शर्मा 24

» 'आनंदमठ' उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना
डॉ. माजिदा एम 27

» अनुसूचित जाति वर्ग की महिला प्रतिनिधियों का राजनीतिक सहभागिता एवं सशक्तिकरण : बिहार के हाजीपुर ब्लॉक के संदर्भ में एक अध्ययन
गरिमा, डॉ. सुमन सिंह 30

» रामदरश मिश्र के उपन्यास 'पानी के प्राचीर' में आँचलिकता के तत्व
सतीश कुमार भारद्वाज 33

» भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा व्यवस्था
डॉ. श्रीकान्त मिश्र 36

» कितना अकेला आकाश में वर्णित सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ
प्रियंका कुमारी मौर्या 38

» मधु काँकरिया के उपन्यास साहित्य में नारी सशक्तिकरण
सरवजीत कौर 41

» धर्म, धर्म निरपेक्षता तथा भारतीय संस्कृति : निर्मल वर्मा का चिंतन पक्ष
वीना जैन 44

» प्राचीन भारतीय आभूषणों पर विदेशी प्रभाव (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से चौथी शताब्दी ईस्वी)
डॉ. शोभा मिश्रा 48

» शैलेश मटियानी का कथेतर साहित्य
दीपमाला, डॉ. संजय सुनाल 51

» प्राथमिक स्तर पर बच्चों में विभिन्न पाठ प्रस्तुति पर पठन तथा पठन बोध का तुलनात्मक अध्ययन
मनीष कुमार वर्मा 54

» रीतिकालीन कवि कालिदास त्रिवेदी और हजारा
सुप्रिया मिश्रा 56

» "प्रेमचन्द की कहानियों में समाज"
कृष्ण कुमार 58

» वैश्वीकृत भारतीय समाज में नारी का अस्तित्व संघर्ष : आधुनिक हिन्दी नाटकों में
डॉ. लता डी 62

» धूमिल का कवि कर्म और लोकतंत्र के सवाल
सुरेन्द्र कुमार पटेल 64

» किन्नर अस्मिता : पहचान व संघर्ष
इन्दरजीत कौर 67

» हिंदी साहित्य में सूरदास का बाल चरित्र
डॉ. मुनीश कुमार पाण्डेय 70

» प्राचीन भारतीय कर व्यवस्था (मनुस्मृति के विशेष संदर्भ में)
डॉ. जितेंद्र यदानी 72

» गुलज़ार और उनका रचना संसार
माधुरी वर्मा, डॉ. नवल किशोर भाभड़ा 75

» भारत में महिला सशक्तिकरण : स्थिति, चुनौतियां और संभावनाएं
देशराज यादव 78

» चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में वर्णित सामाजिक चेतना
आयुषी 81

» 21 वीं सदी के आर्थिक परिप्रेक्ष्य में भारत-चीन संबंध
कुमारी पूनम, डॉ. सपना बरुआ 83

» वाल्मीकि रामायण में हिंसा और अहिंसा का द्वन्द्व
रीमा, डॉ. रामनाथ यादव 86

» मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श : सामाजिक संदर्भ में
श्री हेमेन्द्र कुमार, डॉ. वीरेंद्र कुमार शर्मा 90

» संयुक्त राष्ट्र के शांति प्रवर्तन अभियानों में भारत की भूमिका
डॉ. विनोद कुमार 93

» संस्था प्रधानों के नेतृत्व गुणों एवं विद्यालय उपलब्धि के मध्य संबंध
राजेश कुमार, डॉ. मनीषा शर्मा 97

» भारतीय संस्कृति और हिंदी साहित्य
डॉ. अनीता वर्मा 101

» चिन्ता एक विकार
डॉ. संजीव कुमार 103